1148

PURNEA UNIVERSITY, PURNIA

Ph.D. Thesis Evaluation Report

Name of the Examiner : **Prof. Ambika Datta Sharma**

Designation : Head Department of Philosophy
Dr. Harisingh Gour University Sagar (M.P.) - 470003 , India.

Email Address : hodphilosophy@dhsgsu.edu.in / theadsharma@gmail.com

Mob. No. : 9406519498

Examiner's specialization :

Title of the thesis : " श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा, परमात्मा और कर्म सिद्धान्त की अवधारणा एवं वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता "

Subject : Philosophy

Degree : **Doctorate of Philosophy**

Faculty : Humanities

Name of the candidate : **Ravi Kumar Ram**

Report enclosed –

05/07/24

147

परीक्षक प्रतिवेदन

परीक्ष्य शोध–प्रबन्ध "श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा, परमात्मा और कर्म सिद्धान्त की अवधारणा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता" रवि कुमार राम द्वारा प्रस्तुत एवं डॉ0 अनीता महतो द्वारा सफलतापूर्वक निर्देशित होकर पूर्णियाँ विश्वविद्यालय की पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया है। शोध–प्रबन्ध के पाँच विस्तृत अध्यायों में गीता की तत्त्वमीमांसा एवं नीतिदर्शन की अपसी संगति को उद्घाटित करने का मौलिक प्रयास किया गया है। प्रथम अध्याय में शंकर, रामानुज, तिलक एवं श्रीअरविन्द्र के गीता विषयक विचारों को परिप्रेक्ष्य बनाकर दूसरे एवं तीसरे अध्याय में आत्मा और परमात्मा के स्वरूप की गंभीर विवेचना की गई है। परमात्मा के स्वरूप को उद्घाटित करते हुए छर, अक्षर एवं परुषोत्तम की विवेचना जिस तरह प्रस्तुत की गई है वह बहुत ही सराहनीय है। शोध–प्रबन्ध के चौथे अध्याय में कर्म की अवधारणा, कर्म के प्रकार एवं निष्काम कर्म की अवधारणा को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में निरूपित किया गया है। कर्मयोग एवं कर्मसन्यास के सन्दर्भ में शंकराचार्य एवं तिलक के मत की विवेचना भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। साथ ही साथ गीता के कर्मयोग और काण्ट के नैतिक विचारों की तुलना का प्रयास भी सराहनीय है। शोध–प्रबन्ध के पाँचवे अध्याय में लोकसंग्रह की अवधारणा की विस्तृत विवेचना करते हुए शोधार्थी ने यज्ञ एवं उसकी आध्यात्मिकता का सुन्दर निरूपण किया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यह शोध–प्रबन्ध गीता की तत्त्वमीमांसा और उसके नैतिक दर्शन की अन्तःसंगति को उद्घाटित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण शोध कार्य है। शोध–प्रबन्ध की भाषा सुबोध और सम्प्रेष्णीय है। टंकन की अशुद्धियाँ नगन्य हैं। शोधार्थी की विश्लेषण क्षमता निष्कर्षोन्मुखी है। शोधार्थी ने मूल और सहायक ग्रन्थों का सूझ–बूझ के साथ उपयोग करते हुए अपनी स्थापनाओं को मजबूती प्रदान किया है। अतः यह शोध–प्रबन्ध पी–एच.डी. उपाधि हेतु अर्ह है। एतदर्थ मैं रवि कुमार राम को दर्शनशास्त्र विषय में पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ की पी–एच.डी. उपाधि प्रदान किये जाने की सहर्ष अनुशंसा करता हूँ।

05/02/24

प्रो0 अम्बिकादत्त शर्मा

आचार्य एवं अध्यक्ष
PROFESSOR & HEAD
दर्शनशास्त्र विभाग
DEPARTMENT OF PHILOSOPHY
डॉ. हरीसिंह गौर वि. वि., सागर (म.प्र.)-470003
Dr. H. S. Gour V. V., SAGAR (M.P.)-4

Scanned with OKEN Scanner

PROF. SABHAJEET S. YADAV
M.A., Ph.D.
Ex Professor & Ex Head
Department of Philosophy
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith,
Varanasi-221002

RESIDENCE :
Pragya Puram, Nasirpur
Susuwahi (B.H.U.)
Varanasi-221005
Mob : 9450614733, 7668744682
7376099081, 8795316344
Email : sabhajitmgkvp@gmail.com

146

Ref. : To:- Date : 08-02-24

Controller of Examination
Purnea University Purnea
Bihar-854301

Subject - Thesis report of Mr. Ravi Kumar Ram (subject - Philosophy)

The thesis is divided into five chapters. The first chapter is an introduction to the epic Srimadbhagvadgita. The second chapter is devoted to the concept of 'Atman' (soul) according to Srimadbhagvadgita. In the Third chapter attention is focussed on the concept of God according to the same text. In the Fourth chapter the candidate explains the law of Karm according to Srimadbhagvadgita. The last chapter is devoted to discussing the contextuality of Srimadbhagvadgita which is the main theme of the thesis. The candidate highlights the importance of 'Samatvayoga' which is one of the main thrusts of Srimadbhagvadgita and concludes that through 'Samatvayoga' we can restore unity, harmony and brotherhood in the society. He argues that one can see social injustice and socio economic inequality in the society everywhere which can only be eradicated through the feeling of 'Samatva' (equality) i.e. to see everyone equal. He refers in this regard to Swami Vivekananda who says that if you want to serve God you should serve humanity because serving humanity is serving God. He claims that Samatvayoga of Srimadbhagvad Gita is lying behind this principle of Swami Vivekananda. He also maintains that this very principle of Samatvayoga lies behind Gandhi's thought of 'Sarvodaya' for one can not work for upliftment of others unless he has the feeling of Samatva (equality) in his heart.

The thesis is comprehensive and well-got up. Language is lucid and logical. Critical method has been adopted by Mr. Ram. He has knowledge of the subject taken up for his Ph.D. I strongly recommend him for a degree of Doctor of Philosophy in the subject Philosophy of Purnea University Purnea.

[signature]
08-02-2024
Dr. Sabhajeet Singh Yadav
Ex-Professor
Department of Philosophy
M.G. Kashi Vidyapith

Scanned with OKEN Scanner

Ḱ45

PURNEA UNIVERSITY, PURNIA

Ph.D. Thesis Evaluation Report

Name of the Examiner : **Prof. Sabhajeet Singh Yadav (retd.)**

Designation : Department of Philosophy
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
University, Varanasi- 221002. India.

Email Address : sabhajitmgkvp@gmail.com

Mob. No. : 9450614733

Examiner's specialization :

Title of the thesis : " श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा, परमात्मा और कर्म सिद्धान्त की अवधारणा एवं वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता "

Subject : Philosophy

Degree : **Doctorate of Philosophy**

Faculty : Humanities

Name of the candidate : **Ravi Kumar Ram**

Examined

Scanned with OKEN Scanner

PURNEA UNIVERSITY, PURNIA

Ph.D. Thesis Evaluation Report

144

Name of the Examiner : **Dr.Anita Mahto (retd.)**

Designation : P.G.Head , Department of Philosophy,
Purnea College, Purnea. Bihar- 854301, India.

Email Address : dranitamahto66@gmail.com

Mob. No. : 9955934512

Examiner's specialization :

Title of the thesis : " श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा, परमात्मा और कर्म सिद्धान्त की अवधारणा एवं वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता "

Subject : Philosophy

Degree : **Doctorate of Philosophy**

Faculty : Humanities

Name of the candidate : **Ravi Kumar Ram**

Report Enclosed

Anita Mahto
21/02/2024

Scanned with OKEN Scanner

14B

परीक्षक (शोध-निदेशक) प्रतिवेदन

यह शोध - प्रबंध रवि कुमार राम द्वारा पूर्णियाँ विश्वविद्यालय पूर्णियाँ में पी- एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया है। इसका शीर्षक " श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार आत्मा, परमात्मा और कर्म सिद्धांत की अवधारणा एवं वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता है। " प्रस्तुत शोध- कार्य मेरे निदेशन में किया गया एक मौलिक एवं प्रासंगिक शोध- कार्य है।

प्रस्तुत शोध- प्रबंध पाँच अध्याय में विभक्त किया गया है - प्रथम अध्याय में श्रीमद्भगवद्गीता: एक परिचय अर्थात् भूमिका में 'गीता- सार' के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया है। द्वितीय अध्याय में आत्मा॰ विचार और तृतीय अध्याय में परमात्मा- विचार दिया गया है। इसमें शोधार्थी ने स्पष्ट रूप से बताया है कि परमात्मा और आत्माएं अलग है। परमात्मा वह है जिन्होंने ज्ञान दिया और आत्माएं वह हैं जिनके लिए ज्ञान दिया गया है। तत्वमीमांसीय रूप में श्रीमद्भगवद्गीता आत्मा और परमात्मा के बीच का संवाद है - इसको शोधार्थी ने स्पष्ट रूप से दिखाया है। चतुर्थ अध्याय में कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति के बारे में स्पष्ट रूप से शोधार्थी ने विश्लेषण किया है। अंतिम अध्याय में श्रीमद्भगवद्गीता की वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में क्या प्रासंगिकता है इसकी विवेचना की गई है।

प्रस्तुत शोध -प्रबंध की भाषा सरल, स्पष्ट और सम्प्रेष्णीय है। टंकन की अशुद्धियाँ नगन्य हैं। अतः मैं रवि कुमार राम को दर्शनशास्त्र विषय में पूर्णियाँ विश्वविद्यालय पूर्णियाँ की पी- एच.डी. उपाधि प्रदान किए जाने की अनुशंसा करती हूँ एवं इसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती हूँ।

Anita Mahto
21/02/2024

डॉ. अनीता महतो

Dr. (Smt.) Anita Mahto
H. O. D. Philosophy Deptt.
Purnea College, Purnea

Scanned with OKEN Scanner